विद्यालय-विकास में प्रधानाध्यापक के नेतृत्व का दृष्टिकोण: झारखंड राज्य के सन्दर्भ में

माड्यूल का क्षेत्र: विद्यालय नेतृत्व का दृष्टिकोण, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का रूपांतरण, साझेदारियों का नेतृत्व

"नेतृत्व का अर्थ दूसरों की योग्यताओं और क्षमताओं को इतने स्पष्ट तरीके से व्यक्त करना है कि लोग स्वयं इन्हें अपने भीतर देखने के लिए प्रेरित हो सकें।"

सीखने के उद्देश्य :

1. प्रधानाध्यापक विद्यालय-नेतृत्व के बहुआयामी दृष्टिकोण को समझ सकेंगे और सभी विद्यार्थियों के लिए अधिगम लक्ष्यों की प्राप्ति का नेतृत्व कर सकेंगे |
2. प्रधानाध्यापक विद्यालय के विकासात्मक रूपांतरण की प्रक्रिया में एक कुशल नेतृत्वकर्ता की भूमिका का निर्वहन कर सकेंगे |
3. प्रधानाध्यापक विद्यालय को एक संगठन के रूप में समझ सकेंगे, विद्यालय की जिम्मेवारियों के निष्पादन हेतु दल का गठन कर उसका नेतृत्व कर सकेंगे तथा सभी हितधारकों को साझेदारीपूर्ण नेतृत्व प्रदान कर सकेंगे |
4. प्रधानाध्यापक स्वयं के और शिक्षकों के भी सतत विकास के महत्व को समझ सकेंगे तथा उसका प्रतिभागितापूर्ण नेतृत्व कर सकेंगे |
5. प्रधानाध्यापक विद्यालय में विभिन्न नवाचारों के प्रोत्साहन के माध्यम से एक समावेशी अधिगम की संस्कृति निर्मित करने में सक्षम हो सकेंगे |

की-वर्ड्स (Key-Words) :

अधिगम, अधिगम-प्रतिफल, अधिगम संगठन, अधिगम संस्कृति, अनुसमर्थन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, दल-निर्माण, नवाचार, नेतृत्व, नेतृत्वकर्ता, बहुआयामी दृष्टिकोण, विद्यालय-नेतृत्व, विद्यालय-रूपांतरण, विविधता, सतत विकास, समावेशी अधिगम, स्वयं का विकास, साझेदारी, हितधारक

परिचय: झारखंड राज्य विविधता से परिपूर्ण है | यह विविधता मुख्यत: भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, भाषिक एवं पारंपरिक सभी स्तरों में विद्यमान है | अत: राज्य के सभी विद्यार्थियों को एक

समान नीति बनाकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करा पाना चुनौतीपूर्ण है | किंतु, इस सन्दर्भ में 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020' की स्पष्ट नीति है-

> **"नयी शिक्षा नीति को सभी विद्यार्थियों के लिए, चाहे उनका निवास स्थान कहीं भी हो, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध करानी होगी | इस कार्य में ऐतिहासिक रूप से हाशिये पर रह रहे समुदायों, वंचित और अल्प-प्रतिनिधित्व वाले समूहों पर विशेष ध्यान दिए जाने की जरुरत होगी | शिक्षा बराबरी सुनिश्चित करने का बड़ा माध्यम है और इसके द्वारा समाज में समानता, समावेशन और सामाजिक-आर्थिक रूप से गतिशीलता हासिल की जा सकती है | ऐसे समूहों के सभी बच्चों के लिए, परिस्थितिजन्य बाधाओं के बावजूद, हर संभव पहल की जानी चाहिए, जिससे वे शिक्षा व्यवस्था में प्रवेश भी पा सकें और उत्कृष्ट प्रदर्शन भी कर सकें |"** (राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020, पृष्ठ सं.- 05)

अत: राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्य के अनुरूप **सभी बच्चों को समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा** उपलब्ध कराने में विद्यालय के समग्र विकास पर ध्यान केन्द्रित करना होगा, जिसमें **प्रधानाध्यापक की बहुआयामी नेतृत्व-क्षमता तथा दृष्टिकोण** की निस्संदेह सबसे प्रमुख भूमिका होगी | प्रधानाध्यापक को अपने विद्यालय की वास्तविक चुनौतियों से निपटने के लिए एवं विद्यालय के रूपांतरण के लिए **संचालन क्षमता से आगे बढ़कर नेतृत्व क्षमता निर्माण** को अपनाना होगा | उन्हें विद्यालय विकास की इस प्रक्रिया में **शिक्षकों एवं विद्यार्थियों सहित सभी हितधारकों को यथोचित नेतृत्व** भी प्रदान करना होगा | नीचे दिए गए विडियो कंटेंट में और भी विस्तार से समझाया गया है
(विडियो लिंक- https://www.youtube.com/live/pFbBnIMt68E?si=lJNBYpXq9fMV4LA8)

विद्यालय नेतृत्व का दृष्टिकोण :

> ***"नेतृत्वकर्ता अर्थात जो इतना विनम्र हो कि वह अपनी परिस्थितियों की जिम्मेदारी स्वीकार करे और इतना साहसी हो कि इन चुनौतियों का सामना करने के लिए रचनात्मक पहल करे |"***

'विद्यालय नेतृत्व का दृष्टिकोण' से तात्पर्य है कि विद्यालय को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रभावी केंद्र के रूप में रूपांतरण के लिए एक वैचारिक एवं व्यावहारिक समझ का विकास, जिसमें **विद्यालय को एक अधिगम संगठन के रूप में** स्वीकार करते हुए, विद्यालय की वास्तविक चुनौतियों को पहचान कर विद्यालय विकास योजना के माध्यम से ऐसे **विजन का निर्माण** किया जाता है, जो **विद्यार्थी को सर्वोपरि** मानता है और **समता, समावेशन तथा गुणवत्ता के मार्गदर्शक सिद्धांत** के आधार पर उसके समग्र विकास के लिए अपेक्षित परिवर्तनों के प्रति सकारात्मक सोच और कार्य की प्रतिबद्धता के साथ **सभी हितधारकों की साझी सार्थक भागीदारी** को अपनाते हुए **उत्कृष्ट अधिगम संस्कृति का सुरक्षित और आनंददायी वातावरण** निर्मित करता है | इस सन्दर्भ में 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020' के आधार सिद्धांत में उल्लिखित है कि **"एक अच्छी शैक्षणिक संस्था वह है, जिसमें प्रत्येक छात्र का स्वागत किया जाता है और उसकी देखभाल की जाती है, जहाँ एक सुरक्षित और प्रेरणादायक शिक्षण वातावरण मौजूद होता है, जहाँ सभी छात्रों को सीखने के लिए विविध प्रकार के अनुभव उपलब्ध कराए जाते हैं और जहाँ सीखने के लिए अच्छे बुनियादी ढाँचे और उपयुक्त संसाधन उपलब्ध हैं | ये सब हासिल करना प्रत्येक शिक्षा संस्थान का लक्ष्य होना चाहिए |"** (राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020, पृष्ठ संख्या- 06)

विद्यालय नेतृत्व के इस दृष्टिकोण को विद्यालय में धरातल पर उतारने और उसे व्यावहारिक रूप देकर गुणवत्तापूर्ण अधिगम लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रधानाध्यापक सबसे प्रमुख तथा उत्तरदायी व्यक्ति होते हैं | **विद्यालय के प्रधानाध्यापक यानि एक दृढ़ इच्छाशक्ति वाले, शिक्षार्थी केन्द्रित, स्वयं में आजीवन अधिगमकर्ता, विद्यालय प्रभावशीलता को बढ़ाने वाले, प्रेरक एवं चिन्तनशील कार्यकर्त्ता और परिवर्तन के सृजक के रूप में एक दूरदर्शी कुशल नेतृत्वकर्ता |**
(विडियो लिंक- https://youtube.com/watch?v=ZKxwA-kAsKs&feature=shared)

झारखंड राज्य में अधिकांश विद्यालय सुदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों एवं कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में अवस्थित हैं, जहाँ शिक्षण-अधिगम की अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं | किंतु, अनेक प्रधानाध्यापकों ने उन चुनौतियों को स्वीकार करते हुए अपने कुशल नेतृत्व से उन विद्यालयों को उत्कृष्ट अधिगम संस्था के रूप में रूपांतरित कर दिया, जो पूरे राज्य में विद्यालय प्रमुख के रूप में कार्य कर रहे नेतृत्वकर्ताओं के लिए प्रेरक उदहारण हैं | विद्यालय नेतृत्व के दृष्टिकोण के क्षेत्र में किये गए ऐसे ही कुछ उत्कृष्ट प्रयासों को केस स्टडी के रूप में हम यहाँ देखेंगे|

केस स्टडी: प्रधानाध्यापक के नेतृत्व ने किया विद्यालय का कायाकल्प

To set the tone of change culture,

We need paradigm shifters and idea champions.

(Fullan, 1993)

श्री अवनींद्र कुमार सिंह ने एस.एस. +2 उच्च विद्यालय, चिलदाग, अनगड़ा, राँची में जुलाई, 2013 में प्रधानाध्यापक पद पर योगदान किया | उन्होंने विद्यालय की वास्तविक स्थिति का आकलन शुरू किया और पाया कि विद्यालय में चहारदीवारी, बिजली, पानी, शौचालय, अनुशासन, अध्ययन-अध्यापन, स्थानीय असामाजिक तत्वों का प्रभाव इत्यादि से संबंधित अनेक चुनौतियाँ थीं | सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि शिक्षक, विद्यार्थी और समुदाय में शिक्षण-अधिगम को लेकर किसी भी प्रकार का कोई उत्साह नहीं था | किंतु, एक कुशल नेतृत्वकर्ता की तरह उन्होंने विद्यालय की यथास्थिति में रूपांतरण के लिए प्रतिबद्धता जताई |

सबसे पहला काम उन्होंने यह किया कि शिक्षकों और विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों के साथ बैठक कर विद्यालय में सकारात्मक परिवर्तन के लिए अपनी प्रतिबद्धता से अवगत कराया और उसके लिए सबके सुझाव माँगे, जिससे सबके दृष्टिकोण को समझा जा सके और एक **साझे विजन का निर्माण** किया जा सके | इस तरह लगभग 15 कार्यदिवसों के अंदर कुल तीन बैठकें कर विद्यालय रूपांतरण के लिए एक साझे विजन का निर्माण कर लिया गया | इस विजन के मुख्य लक्ष्य थे कि आगामी तीन वर्ष में विद्यालय को जिला स्तर पर और पाँच वर्ष में राज्य स्तर पर पहचान दिलाई जाएगी | विद्यालय में विद्यार्थी से लेकर प्राचार्य तक सभी के लिए समय का पालन, अनुशासन का पालन और कर्तव्यनिष्ठा का पालन अनिवार्य होगा | प्रधानाध्यापक विद्यालय के सभी शिक्षकों और कर्मियों के व्यावसायिक हितों का अभिभावक की तरह ध्यान रखेंगे | प्राचार्य और सभी शिक्षक विद्यालय को अपना समझेंगे तथा विद्यार्थी को अपने बच्चे की तरह समझेंगे तथा उनकी प्रगति पर निरंतर ध्यान रखेंगे | क्रमश: योजना बनाकर विद्यालय के भौतिक संसाधन एवं आधारभूत सरंचनाओं को भी प्राथमिकता के आधार पर समृद्ध किया जाएगा, जिसमें रनिंग वाटर युक्त शौचालय और शुद्ध पेयजल, बिजली की व्यवस्था, पर्याप्त डेस्क-बेंच की उपलब्धता, जीवंत प्रार्थना सभा के लिए साउंड सिस्टम इत्यादि को प्राथमिक तौर आगामी तीन माह के अन्दर पूरा कर लिया जाएगा | कुछ ही दिनों के पश्चात आगामी स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर उन्होंने उपस्थित सभी अभिभावकों के समक्ष विद्यालय के साझे विज़न की सार्वजनिक घोषणा करते हुए अपनी प्रतिबद्धता पुन: प्रकट की |

अवनींद्र कुमार सिंह ने अगले कदम के रूप में नवोदय विद्यालय, केंद्रीय विद्यालय आदि के प्राचार्यों से संपर्क कर अपने विद्यालय की वास्तविक परिस्थितियों के सन्दर्भ में निर्मित साझा विज़न पर विचार-विमर्श किया तथा अधिकतम परिवर्तन की संभावनाओं को समझने का प्रयास किया | प्रधानाध्यापक की भूमिका एवं जिम्मेदारी से सम्बंधित विभिन्न पुस्तकों को पढ़ा, लीडरशिप से संबंधित प्रशिक्षण सत्रों को ऑनलाइन माध्यम से देखा और **स्वयं का विकास** किया | इन सबसे उन्हें अपने विजन को पूरा करने के लिए आत्मविश्वास प्राप्त हुआ | उन्होंने इन जानकारियों को अपने शिक्षकों को भी साझा किया | साथ ही, शिक्षकों को अपने व्यावसायिक विकास के लिए **सतत चिन्तनशील अध्येता** बने रहने के लिए प्रेरित किया, जिससे विद्यार्थियों को अधिकतम उत्कृष्ट अधिगम उपलब्ध कराया जा सके |

प्रधानाध्यापक ने एक कुशल नेतृत्वकर्ता की तरह **दल का गठन** किया और जिम्मेवारियों का आवंटन करते हुए नेतृत्व का वितरण किया | यह दल गठन केवल शिक्षकों तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि विद्यार्थियों तक नेतृत्व को स्थानांतरित कर उनको महत्वपूर्ण होने का आत्मबोध कराया | उदहारणस्वरुप विद्यार्थियों को हाउस में विभाजित किया

गया और एक छात्र तथा एक छात्रा को हाउस कैप्टन बनाया गया | इसके अलावा विद्यालय में विभिन्न समितियाँ बनाई गयीं और प्रत्येक समिति के प्रभारी एक शिक्षक और एक छात्र तथा एक छात्रा समिति के कैप्टन बनाये गए | इस प्रकार उन्होंने न केवल दल का नेतृत्व किया, बल्कि सक्षम नेतृत्वकर्ता की तरह दल के सदस्यों को भी व्यावहारिक रूप में नेतृत्वकर्ता बनने का अवसर अवसर प्रदान किया |

विद्यालय प्रबंधन समिति की भागीदारी का नेतृत्व तो प्रधानाध्यापक कर ही रहे थे, किंतु इससे भी एक कदम आगे बढ़कर उन्होंने **विद्यालय की प्रगति में साझेदारी को नया आयाम** दे दिया | विद्यालय में कुल 52 गाँव के विद्यार्थी पढ़ने आते थे और कुछ गाँव तो लगभग 20 किलोमीटर दूर थे | उन्होंने प्रत्येक गाँव के मुखिया और दो महत्वपूर्ण अभिभावकों का चयन कर, जो विद्यालय से जुड़ने और सहयोग करने में इच्छुक थे, उनकी सूची बनवाई और विद्यालय अनुशासन तथा उपस्थिति में अपेक्षित सहयोग के लिए उनसे अनुरोध किया | इन अभिभावकों ने विद्यालय को पर्याप्त सहयोग प्रदान किया | विद्यालय के वार्षिकोत्सव, राष्ट्रीय पर्व के समारोह, खेल-कूद प्रतियोगिता इत्यादि के समय इन अभिभावकों के सहयोग को सार्वजनिक उल्लेख करते हुए विद्यालय में सम्मानित किया जाने लगा | इससे और भी अभिभावक स्वत: विद्यालय से जुड़ने लगे तथा इस एक **नवाचार के नेतृत्व** से एक झटके में विद्यालय की पहुँच और ख्याति पूरे क्षेत्र में फैल गई | विद्यालय सन 1951 में स्थापित हुआ था | प्रथम सत्र से लेकर सन 1985 तक के सभी विद्यार्थी जो विशिष्ट पदों पर सरकार और देश की सेवा कर रहे हैं, उनका अल्युमनी मीट कराया गया | विद्यालय के कुल 87 प्रतिभाशाली विद्यार्थी उस अल्युमनी मीट में उपस्थित हुए और **विद्यालय के साझेदार** बन गए | फिर क्या था, विद्यालय जो अपने उद्देश्य की ओर बढ़ रहा था, अब इस साझेदारी से उड़ान भरने लगा | **यह झारखंड राज्य के सरकारी विद्यालय के दृष्टिकोण से विद्यालय नेतृत्व का अभिनव नवाचार था |**

श्री अवनींद्र कुमार सिंह अपने नेतृत्व के दृष्टिकोण में स्पष्ट थे कि विजन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए **विद्यालय में शिक्षण अधिगम संस्कृति की रचना** करनी होगी | विद्यालय में ऐसा सुरक्षित और आनंददायी वातावरण निर्मित करना होगा, जिससे विद्यार्थी को घर से अच्छा विद्यालय में महसूस हो तथा शिक्षक भी उत्साह से शिक्षण अधिगम का उत्सव मना सकें | उन्होंने अपने दल के

साथ मिलकर विद्यालय का वार्षिक कैलेण्डर बनवाया और उसे लागू कराया | उस कैलेण्डर में सांस्कृतिक कार्यक्रम की तिथियाँ, स्पोर्ट्स डे, हाउस वाइज वाईब्रेंट मॉर्निंग असेंबली, साप्ताहिक जांच परीक्षा की तिथियाँ, शिक्षण सहगामी गतिविधियाँ, निबंध, भाषण, क्वीज, नृत्य, गीत इत्यादि विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए तिथियाँ पूर्व निर्धारित थीं | झारखंड के किसी सरकारी विद्यालय के प्रधानाध्यापक द्वारा उन दिनों इस प्रकार का वार्षिक शैक्षणिक कैलेंडर बनाकर शिक्षण अधिगम का उत्सवपूर्ण माहौल निर्मित करना, पढ़कर अतिशयोक्ति लग सकता है, पर यह यथार्थ है | **इस माहौल का असर यह हुआ कि मात्र तीन वर्ष में ही विद्यालय को राज्य स्तर पर पहचान मिल गई, जानते हैं कैसे ? वर्ष 2016 की बोर्ड परीक्षा में छात्र विकास कुमार चौधरी ने रैंक- 01 से स्टेट टॉपर रहकर और जय आनंद ने राज्य स्तर पर ही रैंक- 06 लाकर विद्यालय को पूरे राज्य में गौरवान्वित किया |** शिक्षकों को प्रोत्साहित करने के लिए विद्यालय स्तर पर उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार को आरम्भ किया | जुलाई 2013 में इनके प्रधानाध्यापक बनने के समय नामांकन 795 था और वर्ष 2023 में नामांकन 2187 पहुँच गया | आलम यह हो गया कि जब भी कोई टीम राज्य सरकार से या केंद्र सरकार से विजिट के लिए आती तो जिला प्रशासन के लिए सबसे पहला विकल्प होता था, एस. एस. +2 उच्च विद्यालय, चिलदाग, अनगड़ा, राँची | विद्यालय के कितने ही विद्यार्थियों ने खेलकूद में जिला स्तर की तो बात ही नहीं, राज्य स्तर पर अपनी पहचान बनाई | कबड्डी की टीम राष्ट्रीय स्तर पर खेली और हैंडबाल में भी विद्यालय ने **SGFI** के स्तर पर प्रतिभाग किया |

अवनींद्र कुमार सिंह के विषय में यह कथन सटीक बैठता है कि **"गुणवत्ता वाले लीडर एक चुंबक की तरह होते हैं, जो अच्छे लोगों को आकर्षित करते हैं |"** हुआ भी ऐसा ही | वर्ष 2017 में झारखंड स्थापना दिवस के अवसर पर श्री अवनींद्र कुमार सिंह को माननीय मुख्यमंत्री के द्वारा **'झारखंड सम्मान'** से नवाजा गया और पुरस्कार स्वरुप एक लाख रूपये की राशि प्रदान की गई, जिससे उन्होंने पूरे विद्यालय में दीवारों पर शिक्षाप्रद, प्रेरक और आकर्षक पेंटिंग्स बनवाया |

साथ ही, शेष बची राशि से अपने प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद की स्थापत्य मूर्ति का निर्माण करवाया, जो विद्यार्थियों को अनवरत प्रेरणा देता रहेगा - "**उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न कर लो |"** श्री अवनींद्र कुमार सिंह वर्ष 2022 में राज्य शिक्षक पुरस्कार से

सम्मानित किये गए एवं अपनी नेतृत्व क्षमता और कर्मठता के बल पर 02 बार राष्ट्रपति शिक्षक पुरस्कार के लिए नामित किये गए |

चिंतन के प्रश्न:

1. विद्यालय नेतृत्व के दृष्टिकोण को आप किस प्रकार समझते हैं ?
2. प्रधानाध्यापक के रूप में आप अपने विद्यालय की चुनौतियों से निपटने के लिए कौन-सी रणनीति बनाएँगे ?
3. अपने विद्यालय में आनंददायी अधिगम वातावरण निर्मित करने के लिए आप कौन-से नवाचार करना चाहेंगे ?
4. आप अपने विद्यालय के लिए विज़न बनाते समय किन बातों को प्राथमिकता देंगे ?
5. नेतृत्वकर्ता के लिए स्वयं का विकास करने से आप क्या समझते हैं ?

केस स्टडी: प्रधानाध्यापक की कहानी, उन्हीं की जुबानी: खुद विद्यार्थियों ने नेतृत्व किया

प्राथमिक विद्यालय गोपालपुर, देवघर जिले में मुख्यालय से 7 किलोमीटर दूर स्थित है एवं आज वहाँ जाने के लिए रास्ता भी सुगम है | किंतु, सन 2009 में स्थिति आज से काफी इतर थी | न तो विद्यालय जाने हेतु पक्की सड़क थी, न ही रास्ते में पड़ने वाली नदी पर पुल था | विद्यालय जंगल के बीचोबीच अवस्थित था । विद्यालय चहारदीवारी विहीन था, भवन बहुत पुराना था और सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात यह थी कि विद्यालय एक बंद विद्यालय की श्रेणी में आता था । पोषक क्षेत्र के अभिभावकों को विद्यालय से उम्मीद ना के बराबर थी | सन 2009 के अक्टूबर माह में मेरी नियुक्ति इस विद्यालय में हुई जो कि मेरे करियर में प्रथम पदस्थापना थी । मैं एक शिक्षक पुत्र होने के नाते बचपन से शिक्षकों के सम्मान के बारे में काफी कुछ सुना था, किंतु वहाँ पर स्थिति काफी भयावह थी | सरकारी कर्मी को काफी हेय दृष्टि से देखा जाता था । शायद उनके घृणा का मुख्य कारण यह था कि उनके बच्चों को पढ़ने के लिए अच्छा विद्यालय नहीं था और गरीब होने के बावजूद अपनी मेहनत की कमाई का एक बड़ा हिस्सा प्राइवेट विद्यालय में फी चुकाने में खर्च हो जाया करता था । मैंने पदभार संभालते हुए सर्वप्रथम पोषक क्षेत्र का भ्रमण किया, अभिभावकों को विश्वास दिलाया और अनुरोध किया कि अपने बच्चों को सरकारी विद्यालय में नामांकित कराएँ, पर मायूसी हाथ लगी । गरीब अभिभावकों में भी अंग्रेजी मीडियम स्कूल का बहुत क्रेज था । वे भूखे पेट रहना पसंद करते थे, लेकिन सरकारी विद्यालय में पढ़ाना उन्हें मंजूर नहीं था । विद्यालय में नामांकित चंद बच्चों के साथ ही मैंने विद्यालय का कायाकल्प करने को एक अभियान के रूप में शुरू किया । बच्चों में संस्कार के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा में बोलचाल का माहौल तैयार किया । छात्रों को नित्य नयी-नयी गतिविधि करवाते हुए उनकी प्रतिभा का प्रदर्शन गाँव के टोले-मुहल्लों में जाकर करवाया । धीरे-धीरे अभिभावक प्रभावित होने लगे । स्थिति बदलनी शुरू हुई और विद्यालय में नामांकन में वृद्धि होने लगी । अब अगली चुनौती थी विद्यालय में इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमी को दूर करना । विद्यालय के बच्चों का टैलेंट धीरे-धीरे प्रखंड के सभी पदाधिकारियों तक पहुँचने लगा और उन्होंने विद्यालय का निरीक्षण किया एवं बच्चों से काफी प्रभावित हुए । विभाग की ओर से हर संभव मदद मिलनी शुरू हुई, जिसके फलस्वरुप विद्यालय में नया भवन, चहारदीवारी, शौचालय इत्यादि का व्यवस्थित एवं आकर्षक निर्माण कराया गया । सरकार के द्वारा विद्यालय को उपलब्ध

कराई जाने वाली हर सुविधा को पूर्ण ईमानदारी के साथ सहज सुलभ करवाया गया । धीरे-धीरे अभिभावकों में संतुष्टि बढ़ी । अब तीसरी चुनौती जो उभरकर सामने आई वह थी, समुदाय की उदासीनता । सामान्यतः सरकारी विद्यालय के छात्रों के अभिभावक निर्धन होने के साथ-साथ अशिक्षित भी होते हैं | मैंने विद्यालय के सभी बच्चों की अपनी बालसेना के रूप में दल गठित किया | उनके द्वारा गाँव में स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने हेतु अभियान चलाया गया | गाँव में नदी के पास लोग पहले खुले में शौच जाया करते थे | बच्चों के द्वारा अभियान चलाकर उनके अभिभावकों को भी जागरूक करने का काम किया गया एवं पूरे गाँव को ओडीएफ घोषित करवाया गया । किसी ने सच ही कहा है कि किसी शिक्षक के लिए उसके छात्र उसकी चलती-फिरती डायरी से कम नहीं हैं । इस विद्यालय के नन्हे-मुन्ने बच्चे स्वयं इतने स्फूर्तिवान और सक्रिय नेतृत्वकर्ता बने कि उन्होंने अपने अभिभावकों का भी मन बदल दिया । सभी विद्यार्थियों ने ही अपने अभिभावकों को विद्यालय की ओर उन्मुख किया । अभिभावकों ने अपना समय, श्रम और सेवा विद्यालय को समर्पित करना प्रारंभ किया | **विद्यालय की दशा-दिशा कुछ इस कदर परिवर्तित हुई कि इस विद्यालय को राष्ट्रीय फलक पर पहचान मिली । देश के सबसे सुंदर और स्वच्छ विद्यालय की श्रेणी में यह अग्रणी बना एवं भारत सरकार ने सबसे सुंदर विद्यालय के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर अपने पोस्टर में प्राथमिक विद्यालय गोपालपुर को प्रदर्शित किया |**

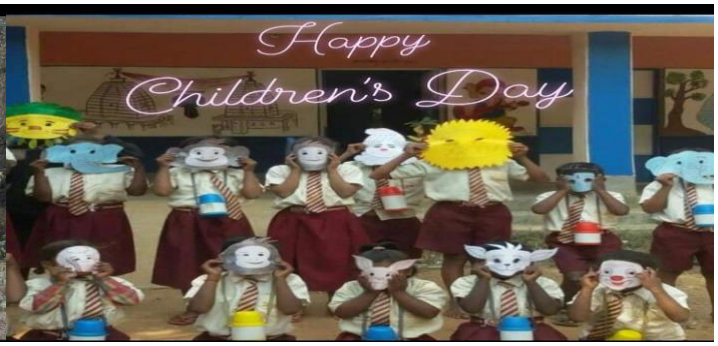

इस सकारात्मक परिवर्तन का प्रतिफल भी मिला | एक तरफ विद्यालय को वर्ष 2018 में जहाँ राष्ट्रीय स्तर पर **स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार** से नवाजा गया, वहीं दूसरी तरफ मुझे भी एक शिक्षक के रूप में इसी वर्ष **राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार** से सम्मानित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । लोग मेरे वास्तविक नाम को भूल गए और राज्य स्तर पर प्राथमिक विद्यालय गोपालपुर ही मेरी पहचान बन गई ।

<u>चिंतन के प्रश्न:</u>

1. प्रधानाध्यापक के रूप में आप अपने विद्यार्थियों को कैसा नेतृत्व प्रदान करेंगे ?
2. समुदाय की सहभागिता के लिए आप कौन-से नवाचार अपनाएँगे ?
3. नेतृत्वकर्ता के लिए बड़ी से बड़ी चुनौतियाँ अवसर में बदल जाती हैं, कैसे ? चिंतन करें |

केस स्टडी: समुदाय की सहभागिता से मंजिल की ओर

श्रीमती अनीता भेंगरा राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय दुलसुलमा, सतबरवा, पलामू की प्रधानाध्यापिका हैं, जो वन क्षेत्र में गरीब और वंचित वर्ग की आबादी वाले गाँव में अवस्थित है । वर्ष 2018 में इन्होंने इस विद्यालय में एक प्रभारी प्रधानाध्यापिका के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया, उस समय विद्यालय में कुल नामांकन संख्या 30 थी । इनके अथक प्रयास से नामांकन बढ़कर 185 हो गया है । श्रीमती भेंगरा ने अपने कुशल नेतृत्व से गरीब ग्रामीणों के बीच शिक्षा की अलख जगा दी | उन्होंने समुदाय को साझीदार बनाकर विद्यालय का सुन्दर, आकर्षक और आनंददायी विद्यालय के रूप में कायाकल्प कर दिया | इस विद्यालय में प्रवेश करते ही लगेगा मानो आप किसी सुसज्जित बगीचे में आ गए हों । विद्यालय के रख-रखाव में विद्यालय परिवार के साथ-साथ समुदाय का भी योगदान है । विद्यालय में सुसज्जित वर्ग-कक्ष, पोशाक में बच्चे, स्वच्छ शौचालय और आनंदमयी शिक्षण वातावरण श्रीमती भेंगरा के विचारों को नया आयाम दे रहे हैं । इनके कुशल कार्यनीति और सकारात्मक सोच के बारे में सुनकर वर्तमान शिक्षा सचिव महोदय ने इस विद्यालय का स्वयं निरीक्षण किया और विद्यालय के वातावरण तथा उत्साहपूर्ण शिक्षण-अधिगम संस्कृति के जीवंत रूप को देखकर श्रीमती भेंगरा के कुशल नेतृत्व की सराहना की । **इतना ही नहीं, नीति आयोग और प्रधानमंत्री कार्यालय, भारत सरकार के द्वारा भी विद्यालय की सराहना की गई एवं विद्यालय की तस्वीरों को साझा करते हुए ट्वीट भी किया गया |**

उपायुक्त पलामू के द्वारा श्रीमती भेंगरा को उनके उत्कृष्ट विद्यालय नेतृत्व के लिए सराहना पत्र प्रेषित किया गया | श्रीमती अनीता भेंगरा ने अपने कुशल नेतृत्व से **'जंगल में मंगल' की** कहावत को चरितार्थ कर दिया | बातचीत के क्रम में वे इस सफलता का सारा श्रेय स्वयं को ना देकर पूरे समाज

को देना चाहती हैं । उनका कहना है कि परिवर्तन एक दिन में नहीं होता है; परिवर्तन में धैर्य, अनुशासन, समय और समुदाय की सहभागिता का योग होता है ।

चिंतनशील प्रश्न:

1. एक नेतृत्वकर्ता के रूप में आप अपने विद्यालय में कौन-से परिवर्तन करना चाहेंगे, जो विद्यालय की राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना दें ?
2. 'जगह चाहे जो हो और परिस्थिति चाहे जैसी हो, बदलाव संभव है', इस कथन के विषय में आपके विचार क्या हैं ?
3. आपके विद्यालय में केंद्रीय दल के द्वारा भ्रमण प्रस्तावित है, आप अपने नेतृत्व में किये हुए कौन-से बदलाव दिखाना चाहेंगे ?

केस स्टडी: साझेदारी का नेतृत्व

श्री महेंद्र प्रसाद पलामू जिले में नवसृजित प्रखंड रामगढ़ के एकमात्र स्तरोन्नत +2 उच्च विद्यालय, रामगढ़ में पदस्थापित हैं । यह विद्यालय जिला मुख्यालय से लगभग 30 किलोमीटर दूर जंगल में अवस्थित है | श्री महेंद्र प्रसाद ने जब विद्यालय में योगदान किया, उस समय भवन एवं उपस्कर जर्जर अवस्था में थे | विद्यालय में कक्षा 01 से कक्षा 12 तक में कुल नामांकित विद्यार्थियों की संख्या मात्र 353 थी । शिक्षण अधिगम का कोई उत्साहपूर्ण माहौल नहीं था । पोषक क्षेत्र एवं समुदाय में भी विद्यालय एवं शैक्षणिक क्रिया-कलापों के प्रति पूरी उदासीनता थी |

प्रधानाध्यापक ने अपनी नेतृत्व क्षमता से विद्यालय को एक उत्कृष्ट शिक्षण अधिगम केंद्र के रूप में रूपांतरित करने का निर्णय लिया । इसके लिए उन्होंने शिक्षकों के प्रति आस्था दिखाते हुए उन्हें अध्ययन-अध्यापन हेतु प्रेरित किया | विद्यालय विकास के संबंध में सभी के दृष्टिकोण को समाहित करते हुए एक वर्षीय, तीन वर्षीय और पाँच वर्षीय लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए विज़न का निर्माण किया गया | सर्वप्रथम उन्होंने उस समय विद्यालय में उपलब्ध कुल पांच शिक्षकों के अनुरूप एक व्यावहारिक समय-सारणी का निर्माण कराकर पठन-पाठन का उत्कृष्ट माहौल बनाने पर अपना ध्यान केन्द्रित किया, जिससे समुदाय में विद्यालय के प्रति एक सकारात्मक नजरिया और विश्वास विकसित हुआ | इसका परिणाम यह हुआ कि वर्ष 2019 में कक्षा-10 में 27 छात्र प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए, जिसमें एक छात्र राहुल कुमार को गणित विषय में पूरे 100% अंक प्राप्त हुए । मात्र तीन वर्षों में विद्यालय जर्जर भवन से रूपांतरित होकर स्वच्छता के मानक पर फाइव स्टार विद्यालय की श्रेणी में सम्मिलित हुआ । उसी वर्ष नामांकन 353 से बढ़कर 1058 तक पहुँच गया | उन्होंने मुखिया श्रीमती हेमवंती देवी के सहयोग से विद्यालय में चहारदीवारी एवं वर्गकक्ष का मरम्मत कराया । विद्यालय में आज रनिंग वाटर की सुविधा से युक्त शुद्ध पेयजल एवं स्वच्छ शौचालय की व्यस्था है | समुदाय के सहयोग एवं जन भागीदारी से विद्यालय में पांच किलोवॉट का किर्लोस्कर जेनरेटर की व्यवस्था भी कराई गई । तत्कालीन प्रखंड विकास पदाधिकारी से संपर्क कर बच्चों के खेलकूद की सामग्री, जूता, जर्सी उपलब्ध कराया गया। समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम कराकर विद्यालय के छात्रों के कला कौशल का विकास किया। इस कार्य में विद्यालय के सभी शिक्षकों की सराहनीय भूमिका रही ।

विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को उत्कृष्ट कार्यों के लिए पुरस्कृत कराया गया, जिससे उनका मनोबल बढ़ा और विद्यालय में शिक्षण-अधिगम की उत्साहपूर्ण कार्य-संस्कृति विकसित हुई । विद्यालय को सुदृढ़, आकर्षक एवं सुरक्षित बनाने में समुदाय, विद्यालय प्रबंधन समिति, शिक्षकों तथा छात्रों का सहयोग प्राप्त किया गया । बच्चों के नामांकन तथा उपस्थिति बढ़ाने हेतु विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों, बाल संसद के सदस्यों, अभिभावकों तथा शिक्षकों का सहयोग लिया गया । उस प्रयास का परिणाम है कि मात्र पाँच वर्षों में नामांकन 353 से बढ़कर वर्तमान शैक्षणिक सत्र में 1172 तक पहुँच गया तथा विद्यालय के कक्षा दसवीं बोर्ड का परीक्षा परिणाम 98% तथा बारहवीं बोर्ड का परीक्षा का परिणाम 100% तक पहुंचा । कला महोत्सव में जिला स्तरीय प्रतियोगिता में विद्यालय को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ । 'खेलो झारखंड' में जिला स्तर पर कुल 12 स्वर्ण पदक के साथ विद्यालय को जिला में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ ।

<u>चिंतन के प्रश्न:</u>

1. विद्यालय रूपांतरण के प्रधानाध्यापक के प्रयास को आप किस रूप में देखते हैं ?
2. आप अपने विद्यालय का नेतृत्व किस प्रकार करेंगे ?
3. केस अध्ययन में अपनाये गए नवाचार और क्रियाकलाप के अतिरिक्त आपके दृष्टिकोण से और कौन-से नवाचार अपनाये जा सकते हैं ?

केस स्टडी: प्रधानाध्यापक के नेतृत्व ने बदला विद्यालय का शैक्षिक परिदृश्य

आज हम परिचय करेंगे ऐसे प्रधानाध्यापक से जो अपने नेतृत्व कौशल, जुनूनी प्रवृत्ति एवं उपलब्ध मानवीय संसाधनों के समुचित उपयोग से विद्यालय के छात्र-छात्राओं के अधिगम स्तर को औसत से काफी ऊपर पहुँचा दिए | जी हां! बात हो रही है झारखंड के उत्तर-पूर्व दिशा में माँ गंगा की गोद में विराजमान और राजमहल पहाड़ियों की सुंदर वादियों में अवस्थित साहिबगंज जिले के एक सुदरवर्ती प्रखंड बरहेट के राजकीयकृत मध्य विद्यालय, कुसुमा के प्रधानाध्यापक श्री मोतीलाल पंडित के बारे में, जिन्होंने विद्यालय के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ उपयोगी और सार्थक नवाचारों के माध्यम से शैक्षणिक परिदृश्य को बदल डाला ।

प्रधानाध्यापक श्री मोतीलाल पंडित के समक्ष प्रारंभिक चुनौतियाँ :

1. एकल शिक्षकीय विद्यालय (2012 से 16 तक) का संचालन जहाँ नामांकन 450 था ।

2. छात्र-छात्राओं की निम्न उपस्थिति (25% से 30%) |
3. छात्र-छात्राओं का निम्न अधिगम स्तर ।
4. शिक्षार्थियों की छात्रवृत्ति प्रतियोगिता परीक्षा में नगण्य सहभागिता ।
5. शिक्षार्थियों के आंतरिक गुणों का विमुखीकरण ।

प्रधानाध्यापक ने अपने सफल नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन करते हुए विभागीय सहायता, सामुदायिक सहभागिता एवं स्वयं के नेतृत्व से सर्वप्रथम विद्यालय के भौतिक संसाधनों को सुदृढ़ किया । तत्पश्चात उनका पूरा ध्यान विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति एवं उनके अधिगम स्तर उन्नयन पर केंद्रित रहा, जो वर्तमान में भी योजनाबद्ध तरीके से जारी है ।

प्रधानाध्यापक द्वारा शैक्षणिक बदलाव हेतु नवाचार व क्रियाकलाप का नेतृत्व :

1. टी0 एल0 एम0 आच्छादित कक्षा-कक्ष ।
2. सक्रिय व व्यवस्थित पुस्तकालय ।
3. शिक्षार्थियों एवं शिक्षकों के लिए अलग-अलग रीडिंग कॉर्नर का निर्माण ।
4. शैक्षणिक प्रिंट रिच वॉल ।
5. विभिन्न विषयों हेतु प्रदर्शन कॉर्नर का निर्माण ।
6. उन्नत अधिगम स्तर वाले बच्चों का निम्न अधिगम स्तर वाले बच्चों के साथ पीयर लर्निंग ।
7. प्रतियोगिता परीक्षा की अलग से तैयारी एवं करियर काउंसलिंग ।
8. शिक्षकों के साथ साप्ताहिक एकेडमिक संवाद ।
9. नैतिक पाठशाला का निर्माण ।

विगत कुछ वर्षों में विद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियाँ

सत्र	सम्मिलित परीक्षार्थी	सफल परीक्षार्थी	अभ्युक्ति
जैक द्वारा आयोजित आठवीं बोर्ड परीक्षा परिणाम			
2018-19	74	60	
2019-20	50	**50**	
2022-23	88	83	
राष्ट्रीय साधन सह मेधा छात्रवृत्ति परीक्षा में चयन			
2019-20		03	

2020-21		04	
2021-22		**07**	
2022-23		**06**	
मुख्यमंत्री मेधा छात्रवृत्ति परीक्षा में चयन			
2022-23		**01**	
नेतरहाट परीक्षा			
2021-22		**01**	
सैनिक स्कूल तिलैया में चयन			
2022-23		01	
नवोदय विद्यालय में चयन			
2022-23		01	नवमी कक्षा हेतु
2023-24		02	छठवीं कक्षा हेतु

चिंतनशील प्रश्न :

1. विद्यालय में उत्कृष्ट शिक्षण अधिगम हेतु अपने शिक्षकों को T.L.M. निर्माण के लिए कैसे प्रोत्साहित करेंगे ?
2. आपके विद्यार्थियों का उनकी आगे की पढ़ाई के लिए किसी उत्कृष्ट विद्यालय में चयन हो, इसके लिए आप क्या प्रयास करेंगे ?

माड्यूल आधारित विमर्श के प्रश्न:

1. एक नेतृत्वकर्ता के रूप में विद्यालय नेतृत्व के लिए किन गुणों का होना आवश्यक है ?
2. आपके विद्यालय के समक्ष कौन-सी चुनौतियाँ हैं ?
3. आप अपने विद्यालय के विज़न का निर्माण किन आधारों पर करेंगे ?
4. 'एक चिंतनशील अध्येता होने को' स्वयं के विकास के लिए कितना महत्वपूर्ण मानते हैं ?
5. विद्यालय प्रमुख एवं नेतृत्वकर्ता होने के नाते आप विद्यालय में अपनी बहुआयामी भूमिका को लिखें और चिंतन करें कि इसे पूरा करने में कैसे अपने दल को साझीदार बनायेंगे ?
6. आप अपने विद्यालय में सुरक्षित और आनंददायी शिक्षण का वातावरण निर्मित करने के लिए कौन-से कदम उठाएँगे ?

निष्कर्ष:

शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान युग की बढ़ती आकांक्षाओं के अनुरूप विद्यालयों को रूपांतरित करना अनिवार्य हो गया है | विद्यालय जहाँ अवस्थित होता है, वह उस समाज का प्रतिबिंब होता है | विद्यालय से उस पूरे क्षेत्र के परिवेश की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आयाम न केवल जुड़े होते हैं, बल्कि विद्यालय को प्रभावित करते हैं और विद्यालय भी उन्हें प्रभावित करता है | इसलिए विद्यालयों को 'उत्कृष्ट शिक्षण केंद्र' के रूप में पुनर्निर्मित करने की अनिवार्यता बढ़ी है | इस सन्दर्भ में यह तथ्य सदैव ध्यान में रखना होगा कि **"विद्यालय नेतृत्व की आवश्यकता**

उन विद्यालयों के लिए अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है जो प्रतिकूल परिस्थितियों में सीमित संसाधनों के साथ कार्य कर रहे हैं और साथ ही साथ अभिभावकों और समुदाय की बढ़ती अपेक्षाओं से जूझ रहे हैं |" (प्रस्तावना, विद्यालय नेतृत्व विकास: राष्ट्रीय कार्यक्रम की रूपरेखा और पाठ्यचर्या का ढाँचा, पृष्ठ संख्या- 01)

यह महत्वपूर्ण उद्देश्य बिना प्रधानाध्यापक के नेतृत्व के संभव नहीं है | प्रधानाध्यापक को अपने नेतृत्व के दृष्टिकोण को भी विद्यालय की वास्तविक चुनौतियों के अनुरूप सतत विकसित करते रहना होगा | चूँकि, प्रधानाध्यापक विद्यालय में समग्र बदलाव की प्रक्रिया के केंद्र में एवं सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति होते हैं, इसलिए उन्हें विद्यालय नेतृत्व के दृष्टिकोण में अपने प्रशासकीय एवं प्रबंधकीय दायित्वों से आगे बढ़कर विद्यालय का कुशल नेतृत्वकर्ता बनना होगा | एक सक्रीय नेतृत्वकर्ता के रूप में प्रधानाध्यापक को विद्यालय को अधिगम संगठन के रूप में देखते हुए अपनी बहुआयामी भूमिका की पहचान करनी होगी, विद्यालय में बदलाव के लिए ऐसे साझे विज़न का निर्माण करना होगा, जिसमें बच्चों के समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए समावेशी, समतापरक एवं गुणवत्तापूर्ण आनंददायी माहौल में शिक्षण अधिगम का वातावरण निर्मित करने का आधारभूत उद्देश्य समाहित हो | साथ ही, विद्यालय रूपांतरण के इस उद्देश्य की पूर्ति में सभी हितधारक अपने विचार, भावना प्रतिबद्धता एवं पूरी निष्ठा से टीम भावना में संलग्न होकर काम करेंगे | यदि प्रधानाध्यापक विद्यालय नेतृत्व के इस दृष्टिकोण का नेतृत्व कर सकेंगे तो निस्संदेह हमारा विद्यालय किसी भी परिस्थिति से रूपांतरित होकर उत्कृष्ट शिक्षण केंद्र के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर सकता है |

अतिरिक्त पाठ्य सामग्री:

1. **राष्ट्रीय कार्यक्रम की रूपरेखा और पाठ्यचर्या का ढाँचा,** राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
2. **विद्यालय नेतृत्व का विकास** (हस्तपुस्तिका), राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
3. **शिक्षा शास्त्रीय नेतृत्व: विद्यालयों में अधिगम नेतृत्व के लिए हस्तपुस्तिका,** राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
4. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,** मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
5. **विद्यालय नेतृत्व: अवधारणा एवं प्रयोग (निष्ठा 1.0),** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
6. **विद्यालय नेतृत्व: अवधारणा एवं प्रयोग (निष्ठा 2.0),** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
7. **अति प्रभावकारी लोगों की 7 आदतें,** स्टीफन आर. कवी
8. https://www.open.edu/openlearncreate/mod/oucontent/view.php?id=80237&printable=1
9. https://www.youtube.com/live/Bnl0iM4-Mrs?si=PfK-EdJp-QjZcJmp

माड्यूल निर्माण समूह

1. **विनय कुमार सिंह** (सदस्य, स्टेट कोर कमिटी, SLA Jharkhand),
   विद्यालय- रामनारायण राजकीयकृत +2 उच्च विद्यालय हंटरगंज, चतरा
2. **अवधेश कुमार झा** (सदस्य, जिला विद्यालय नेतृत्व केंद्र, राँची),
   विद्यालय- बालकृष्ण +2 उच्च विद्यालय, राँची
3. **वीणा रहमान,** (सदस्य, जिला विद्यालय नेतृत्व केंद्र, पलामू)
   विद्यालय- राजकीय बालिका +2 उच्च विद्यालय, मेदिनीनगर, पलामू
4. **शीतल कच्छप,** (सदस्य, जिला विद्यालय नेतृत्व केंद्र, गिरिडीह)
   विद्यालय- गिरिडीह +2 उच्च विद्यालय, मेदिनीनगर, गिरिडीह
5. **ममता मुर्मू,** (सदस्य, जिला विद्यालय नेतृत्व केंद्र, साहिबगंज)
   विद्यालय- राजस्थान इण्टर विद्यालय, साहिबगंज
6. **रूबी कुमारी,** (सदस्य, जिला विद्यालय नेतृत्व केंद्र, लातेहार)
   विद्यालय- मुख्यमंत्री उत्कृष्ट कन्या विद्यालय, लातेहार
7. **अमरेंद्र नारायण,** (सदस्य, जिला विद्यालय नेतृत्व केंद्र, पलामू)
   विद्यालय- राजकीय मध्य विद्यालय, शाहपुर, पलामू
8. **मनोहर शर्मा,** (सदस्य, जिला विद्यालय नेतृत्व केंद्र, साहिबगंज)
   विद्यालय- मुख्यमंत्री उत्कृष्ट कन्या विद्यालय, साहिबगंज
9. **वरुण कुमार,** (सदस्य, जिला विद्यालय नेतृत्व केंद्र, गढ़वा)
   विद्यालय- राजकीय मध्य विद्यालय, करकोमा, मेराल, गढ़वा